वार्तालाप नं 611, दिनांक 24.08.2008, टी.पी.जी.
Disc.CD No. 611, dated 24.08. 2008, at T.P.G.

समय- 00.58-01.44

जिज्ञासु:- बाबा अष्ट लक्ष्मी अलग है, अष्ट देवी अलग है।

बाबा:- अष्ट देव हैं तो उनकी अष्ट देवियाँ भी हैं और आठ नारायण हैं सतयुग के। तो उनकी आठ लक्ष्मी भी हैं। सतयुग में नारायण कितने होगें? 8 नारायण होगें। तो लक्ष्मी भी कितनी होंगी? 8 लक्ष्मी होंगी। और?

जिज्ञासु:- धन लक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी, देवी लक्ष्मी...

बाबा:- हाँ-हाँ, वो तो चाहे गिनाते चले जाओ।

Time: 00.58-01.44
Student: Baba, the eight Lakshmis and the eight *devis* are different.
Baba: There are eight deities so there are their eight *devis* (female deities) as well. And there are eight Narayans of the Golden Age. So, they have eight Lakshmis as well. How many Narayans will there be in the Golden Age? There will be eight Narayans. So, how many Lakshmis will there be as well? There will be eight Lakshmis.
Student: Dhan Lakshmi, Dhaanya Lakshmi, Devi Lakshmi…
Baba: Yes, they can be counted as many as you wish.

समय- 01.54-10.35

जिज्ञासु:- बाबा, महाभारत में दिखाया है कि खुद इन्द्र ने कर्ण के पास जा करके कवच, कुंडल मांगा ना।

बाबा:- किसके पास जाके?

जिज्ञासु:- कर्ण के पास ।

बाबा:- कुन्ती ने?

जिज्ञासु:- इन्द्र ने।

बाबा:- इन्द्र ने जा करके दान मांगा।

जिज्ञासु:- खास अर्जुन के लिये ही मांगा ना?

बाबा:- वो उसका बच्चा था ना।

जिज्ञासु:- इन्द्र में भी ऐसा ममत्व होता है तो ये तो ...।

बाबा:- ये कहानियाँ कहाँ की हैं? जब इन्द्र देवता सम्पूर्ण बना , देवता बन गया उस समय की कहनी है या जब अधूरा था तब की कहनी है? कहानी कहाँ की है? अधूरा है तो मांगता भी है। जब सम्पूर्ण है तो थोड़े ही मांगेगा। इन्द्र देवता कहा गया है, क्योंकि उन्हें तो पता ही नहीं है संगमयुग का और स्वर्ग का लिखने वालों को। अभी हमको तो पता चल गया इन्द्र देवता भी यहीं है और कर्ण भी यहीं है। जब तक यही नहीं समझा कि कर्ण कौन है, तो इन्द्र देवता का भी भ्रम पैदा होता रहेगा।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 01.54-10.35
Student: Baba, it is shown in the Mahabharata that Indra (the king of the deities) himself went to Karna (a Kaurava warrior) and asked him for [his] armour and earrings, didn't he?
Baba: Who did he go to?
Student: Karna.
Baba: Kunti?
Baba: Indra went and sought donation.
Student: He sought [donation] especially for Arjun, didn't he?
Baba: He (Arjun) was his (Indra's) child, wasn't he?
Student: If even Indra has such attachment, so this...
Baba: To which time do these stories pertain? Is this the story of the time when the deity Indra became complete, when he became a deity or is it a story of the time when he was incomplete? It is a story of which time? He seeks [donation] when he is incomplete. When he becomes complete he will not seek [donation]. Indra has been called a deity because those writers do not at all know about the Confluence Age and heaven. Now we have certainly come to know that the deity Indra as well as Karna are present here itself. As long as you don't understand who Karna is, you will continue to have confusion about the deity Indra as well.

कर्ण को महादानी दिखाया गया है। देवताओं को महादानी नहीं दिखाया गया। कर्ण नाम क्यों पड़ा? कर्ण माने क्या होता है? अरे कर्ण माने क्या? कान। ये नाम क्यों पड़ा? अरे नाम किसलिए पड़ता है? काम के आधार पर। देवताओं में कोई ऐसा देवता है जिसके कान बहुत बड़े-2 होते हैं? (किसी ने कहा- गणेश।) गणेश। कान बड़े-2 होते हैं ना। इसका क्या मतलब हुआ? मतलब हुआ कि सुनना और सुनाना जास्ती होता है। इसलिये कान बड़े-बड़े दिखाये गये हैं। तो कर्ण वाली आत्मा भी ज्ञान को सुनने वालों में सबसे जास्ती आगे और सुनाने वालो में भी सबसे जास्ती आगे। ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियां में ये किसका पार्ट है? जिसके कान सबसे पहले सुनते हैं, जो सबसे ज्यादा सुनाता है और सबसे ज्यादा सुनता भी है और पक्ष कौरवों का लेता है या पाण्डवों का पक्ष लेता है? कौरवों का पक्ष लेता है। सब कुछ जानते हुये भी सारा ज्ञान सुनते हुए भी, सुनाते हुये भी, पक्ष फिर भी किसका लेता है? कौरवों का पक्ष लेता है। ये भी जान जाता है कि कौरव और पाण्डव दोनों के बीच में धर्म-अधर्म का युद्ध है। अपने को कुन्ती पुत्र भी समझ लेता है। अन्दर से जानता है कि पाण्डवों में मैं बड़ा भ्राता पाण्डव हूँ। फिर भी कर्मों में परिवर्तन नहीं हो पाता। ऐसा संग का रंग लग जाता है। ऐसा बड़ा महारथी, ऐसा बड़ा महादानी, पाण्डवों में कोई दिखाया नहीं गया।

Karna is shown to be a great donor (*mahaadaani*). Deities have not been shown to be *mahaadaani.* Why was he named Karna? What is meant by Karna? *Arey*, what is meant by Karna? Ears. Why was he given this name? *Arey*, why is a name kept? [It is kept] on the basis of the task [performed]. Is there any deity among the deities who has very big ears? (Someone said: Ganesh.) Ganesh. He has big ears, hasn't he? What is meant by this? It means that he listens and narrates a lot. This is why he is shown to have big ears. The soul of Karna also is ahead of everyone else in listening to the knowledge and he is ahead in narrating it as well. Who plays this *part* in the Confleunce Age Brahmin world? The one whose ears listen first of all, the one who narrates the most and also listens the most. Secondly, does he side with the Kauravas or with the Pandavas? He sides with the Kauravas. Even after knowing everything, listening to the entire knowledge as well as narrating it, he sides with whom? He sides with the Kauravas. He is also aware that a war of *dharma* (religion) and *adharma* (irreligiousness) is being fought between the Kauravas and the Pandavas. He also

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

realizes that he is the son of Kunti. He knows from within that he is a Pandav (son of Pandu), the eldest brother among the Pandavas. Yet he is unable to change his actions. He is coloured by the company in such a way. None among the Pandavas has been shown to be such *maharathi* (great warrior) and *mahadaani* (great donor).

कर्ण की, क्राईस्ट की, कृष्ण की राशि मिलती है कि नहीं मिलती है? राशि भी एक ही है। नाम, मान, शान चाहने वाले कौरवों के पक्ष में जाते हैं या पाण्डवों के पक्ष में जाते हैं? कौरवों के पक्ष में जाते हैं। पाण्डव तो अपने पुरुषार्थ को भी गुप्त रखते हैं। नाम, मान, शान, पद, मर्तबा सब उनका गुप्त होता है। क्रिश्चियन्स् को तो दिखाया ही जाता है दिखावा करने वाला। और क्रिश्चियन्स् और क्राईस्ट फालो किसको करते हैं? किसको फालो किया? कृष्ण को फालो किया। ब्रह्मा का प्रैक्टिकल जीवन जो लौकिक में और अलौकिक में था, वो दिखावा करने वाला जीवन था या यथार्थ को गुप्त रखने वाला था? (किसी ने कहा कुछ कहा।) गुप्त रखने वाला था? (किसी ने कहा- नहीं, नहीं, दिखाने वाले।) दुकान में भी जब धन्धा-धोरी करते थे, तो सोने, चांदी के, हीरों के माल बनाते थे। था कम कीमत का परन्तु कैसी डब्बी में दिखाते थे? बढ़िया फर्स्टक्लास डब्बी में शो करके दिखाते थे। आज की दुनियां में, लौकिक धन्धे-धोरी में, लखापति, करोड़पति कौन बनता है? दिखावा करने वाला बनता है या एक दाम बोलने वाला बनता है? दिखावा करने वाला। एक भागीदार भी था, हीरों की छोटी सी दुकान थी दुनिया के झूठे बाजार में। उसकी दुकान क्यों नहीं चली? क्यों गरीब बन करके रहा? क्या करण था? सच्चाई थी। कलयुगी दुनियां में सच्चाई का बोल-बाला नहीं हो पाता।

Do the horoscopes of Karna, Chirst and Krishna match or not? The zodiac sign is also the same. Do those who seek name, respect, and pride side with the Kauravas or with the Pandavas? They side with the Kauravas. The Pandavas keep even their *purushaarth* (spiritual effort) secret. Their name, respect, pride, position, honour, everything is hidden. Christians are anyway shown to be the ones who show off. And who do the Christians and Christ follow? Whom did they follow? They followed Krishna. Was the *practical* life of Brahma in the *lokik* and the *alokik* a life of showiness or was it a life of keeping the reality in secret? (Someone said something.) Was he the one who kept [the reality] in secret? (Someone said: No, he was the one who made a show of it.) Even when he used to do business at the shop, he used to manufacture golden, silver and diamond jewelry. They used to cost less, but in what kind of a box did he display them? He used to display them in nice, *first class* boxes. In today's world, in the *lokik* business, who becomes millionaire and multimillionaire? Does the one who shows off become [millionaire] or does the one who sticks to one price become [millionaire]? It is the one who shows off. There was the partner as well. He had a small shop of diamonds in the false market of the world. Why was he unable to run his shop? Why did he remain poor? What was the reason? He had truthfulness [in him]. In the Iron Age world truth is not successful.

समय- 10.47-16.48

जिज्ञासु:- आज बाबा ने कहा कि पहले नारायण तो देवता बनता है। फिर कहते वक्त लक्ष्मी का नाम पहले क्यों आता है बाबा?

बाबा:- लक्ष्मी की 63 जन्म की प्योरिटी है। बनी-बनाई बन रही और अब कछु बननी नाय। 63 जन्म की जो प्योरिटी है वो 63 जन्म की प्योरिटी संन्यासियों वाली है या गृहस्थी जीवन वाली है? जो

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

प्योरिटी है ना वो संन्यासियों वाली प्योरिटी है जब तक ज्ञान न मिले। और जब ज्ञान मिल जाता है तो बात समझ में आती है। परन्तु ये नियम बना हुआ है जिसमें जन्म-जन्मांतर की प्योरिटी के संस्कार होंगे वो आत्मायें जब एडवांस में सहयोगी बन जावेंगी जैसे संन्यासी... बड़े-2 संन्यासी जब निकलेंगे तो तुम बच्चों की विजय हो जावेगी। तो जिनसे प्राप्ति करनी होती है उनको मान देना चाहिए, आगे रखना चाहिए। कोई खराब बात है क्या माताओं को आगे रख देने में? अच्छी बात है ना। लेकिन राधा का नाम पहले, कृष्ण का नाम बाद में। ये राधा और कृष्ण सुधरे हुए मनुष्य हैं या भगवान-भगवती हैं? सुधरे हुये मनुष्य हैं। राम-सीता नहीं कहते हैं, सीता-राम कहते हैं। सीता का नाम पहले। ये सीता राम सुधरे हुये मनुष्य हैं या भगवान-भगवती हैं? दुनियां भले भगवान-भगवती मानती हो लेकिन वास्तविकता क्या है? ये भगवान-भगवती नहीं हैं। जहाँ भगवान-भगवती का सवाल आता है वहां पार्वती का नाम पहले और शंकर का नाम बाद में नहीं आता। क्या कहते हैं? शंकर-पार्वती कहा जाता है। भगवान को सदैव आगे रखना होता है। भगवती को सदैव बाद में रखना होता है।

Time: 10.47-16.48
Student: Today Baba said that Narayan becomes a deity first. Then while saying why does Lakshmi's name come first?
Baba: Lakshmi has *purity* of 63 births. Whatever was predetermined is being enacted and nothing new is to be enacted now. Is the *purity* of 63 births a *purity* of the *sanyasis* or of the household life? The *purity* is a *purity* of the *sanyasis*, unless she gets the knowledge. And when she gets the knowledge then she understands the topic. But there is a rule that when the souls who have the *sanskaars* of *purity* of many births become helpful in the advance [party]… like the *sanyasis*; when the big *sanyasis* emerge then you children will become victorious. So, respect should be given to those from whom you have to receive attainments and they should be kept ahead. So, is it bad to keep the mothers ahead? It is good, isn't it? But Radha's name is taken first and the name of Krishna [is taken after her]. Are Radha and Krishna reformed human beings or God (*Bhagwaan*) and Goddess (*Bhagwati*)? They are reformed human beings. They don't say, Ram Sita. They say, Sita Ram. Sita's name comes first. Are these Sita Ram reformed human beings or are they God and Goddess? Although the world believes [them] to be God and Goddess, what is the reality? They are not God and Goddess. When the question of God and Goddess arises then Parvati's name does not come first and Shankar's name does not come later. What do they say? Shankar Parvati. God is to be always kept ahead. Goddess is to be always kept after [Him].

प्योरिटी चाहे जितनी भी हो, भगवान पवित्रों के लिये आता है या अपवित्रों के लिये आता है? अगर पवित्र आत्माओं के लिये ही भगवान आता हो फिर तो जो साधु संन्यासी हैं उनको उंच पद मिलना चाहिए। उनको रुद्रमाला में आना चहिए जो शिव की माला है। रुद्रमाला बड़ी या विजयमाला बड़ी? विजयमाला का मणका बनना खुशनसीबी नहीं है। वो राजयोग नहीं सीखते, अभी भी विजयमाला के मणके राजयोग नहीं सीख रहे हैं। कौन सीखते हैं? रुद्रमाला के, रुद्र के डायरेक्ट बच्चे हैं, वो ही राजयोग सीखने वाले हैं। पवित्रता बड़ी चीज़ है लेकिन प्योरिटी से भी बड़ी चीज़ याद है या प्योरिटी ही बड़ी चीज़ है? याद सर्वोपरि चीज़ है। ज्ञान, योग, पवित्रता की धारणा और सेवा इसमें अव्वल नम्बर वन सब्जेक्ट कौन सा है? याद। धारणा में पास, सेवा में पास, सब सब्जेक्टों में पास और योग में फेल, तो क्या कहा जावेगा? फेल ही कहा जावेगा। और सब सब्जेक्ट्स में फेल हो जाए... बूढ़ी-बूढ़ी

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

मातायें याद में पास हो जावेंगी। बन्धन में रहने वाली मातायें याद में पास हो जावेंगी और सेवा में भी फेल, धारणा में भी फेल और ज्ञान में भी फेल, लेकिन याद में पास हो जावेंगी तो क्या कही जावेंगी पास या फेल? (किसी ने कहा- पास।) पास कही जावेंगी। याद में जो पास हो जावेंगे अन्त में उनके अन्दर ज्ञान स्वत: ही समा जावेगा। ये परिवर्तन कि वण्डरफुल बात देखने में आवेगी। बूढ़ी-बूढ़ी मातायें भी दुनिया वालों को जो ज्ञान सुनायेंगी वो अच्छे-अच्छे ज्ञानी नहीं सुना पायेंगे।

However much purity someone may have, does God come for the pure ones or for the impure ones? If God comes only for the pure souls, the sages and *sanyasis* should get a high postion. They should be included in the *Rudramala* (the rosary of Rudra) which is Shiva's rosary. Is the *Rudramala* greater or is the *Vijaymala* (the rosary of victory) greater? It is not a big fortune to become a bead of the *Vijayamala.* They do not learn Raja yoga. Even now the beads of the *Vijaymala* are not learning Raja yoga. Who learn it? They are the beads of the *Rudramala*, the *direct* children of Rudra who learn Raja yoga. Purity is a great thing, but is remembrance greater than *purity* or is only *purity* great? Remembrance is supreme. Among knowledge, remembrance (yoga), assimilation of purity and service which is the number one *subject*? Remembrance. If someone passes in *dhaaranaa*[1], passes in service, if he passes in all the subjects but fails in remembrance, then what will he be called? He will be called just a failure. And if someone fails in all the [other] subjects; the aged mothers will *pass* in remembrance. The mothers in bondage will *pass* in remembrance. If they *fail* in service, *dhaaranaa* as well as knowledge, but *pass* in remembrance, then what will they be called? Passed or failed? (Someone said: Passed.) They will be callled passed. Those who *pass* in remembrance, knowledge will automatically emerge in them in the end. This *wonderful* aspect of transformation will be visible. Good knowledgeable people will not be able to narrate the knowledge that the old mothers will narrate to the people of the world.

समय- 17.17-18.36

बाबा:- एक प्रश्न आया है - एडवांस ज्ञान में चलने वाले भी शरीर छोड़ रहे हैं उनके 84 जन्म पूरे हुये या नहीं हुये?

उत्तर:- क्या कहें? अभी वो विकार से जन्म नहीं लेंगे? एडवांस ज्ञान में चलने वाले जो शरीर छोड़ रहे हैं उनका विकारी जन्म होगा या नही होगा? 84वें जन्म का बाप मिलेगा या नहीं मिलेगा? नहीं मिलेगा? मिलेगा। और जब 84वें जन्म का बाप मिलेगा, एक जन्म कम रह गया तो भक्ति पूरी हुई या नही हुई? क्या कहें? आखरी जन्म की भक्ति पूरी हुई या अधूरी हुई? क्या कहें? (किसी ने कहा- पूरी हुई।) पूरी हो गई 83 जन्मो में ही? (किसी ने कहा- अधूरी।) अधूरी रह गई भक्ति। अधूरी भक्ति रह गई है इसलिये तो शरीर छोड़ना पड़ा। नहीं तो शरीर क्यों छोड़ना पड़े?

Time: 17.17-18.36
Baba: A question has been asked: Those who are following the *advance* knowledge are also leaving their body. So have they completed 84 births or not?
Answer: What will be said? Will they not be born through vices now? Will those who follow the *advance knowledge* and are leaving their body have birth through vices or not? Will they get a

[1] Putting into practice the divine virtues

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

father of the 84th birth or not? Will they not get [a father]? They will. And when they get the father of the 84th birth, they fell short of one birth; was their *bhakti* over or not? What will be said? Was the *bhakti* of their last birth over or was it incomplete? What will be said? (Someone said: It was over.) Was it over? In just 83 births? (Someone said: Incomplete.) The *bhakti* remained incomplete. The *bhakti* was incomplete that is why they had to leave the body; otherwise why will they have to leave the body?

समय- 18.41-20.44

जिज्ञासु:- बाबा, कृष्ण अष्टमी बेहद में क्या अर्थ है?

बाबा:- राम की नवमी मनाई जाती है और कृष्ण की अष्टमी मनाई जाती है। इसका मतलब ये हुआ कि सतयुग में आठ नारायण होते हैं। आठ नारायणों का सतयुग में जन्म होने के बाद आठवें नारायण का जो वर्सा लेता है वो नौवें नंबर का राम नवमी की यादगार मनाई जाती है। उसकी शूटिंग कहाँ होती है? संगमयुग में। संगमयुग में राम वाली आत्मा जब एडवांस में आती है उस समय, 8 नारायण ज्ञान में पहले से ही तैयार होते हैं। उनमें से सात कृष्ण जैसे बच्चे कंस के कुसावे में आ जाते हैं। कंस उनको कोस लेता है। विकारों की दुनियां में ढकेल देता है कंस। और कृष्ण बच जाता है। कृष्ण वाली आत्मा जो है वो राम की बुद्धि रुपी टोकरी में सुरक्षित हो जाती है। इसलिये आठ नारायणों का जन्म होने के बाद, आठ नारायणों की प्रत्यक्षता होने के बाद, जिनका कनेक्शन अष्टदेवों से है नौवां नम्बर राम की प्रत्यक्षता होती है। तो राम नवमी मनाते हैं।

Time: 18.41-20.44
Student: Baba, what is the unlimited meaning of *Krishna ashtami*?
Baba: Ram's *navami*[2] and Krishna's *ashtami*[3] is celebrated. It means that there are eight Narayans in the Golden Age. After the birth of eight Narayans in the Golden Age, the one who takes the inheritance of the eighth Narayan, *Ramnavami* is celebrated as a memorial of that ninth number [Narayan]. Where does its *shooting* take place? In the Confluence Age. When the soul of Ram comes in the advance [knowledge] in the Confluence Age, at that time the eight Narayans are already present in the [*yagya* of] knowledge. Among them seven Krishna like children are killed by Kansa[4]. Kansa kills them. He pushes them in the world of vices. And Krishna is saved. The soul of Krishna becomes safe in the basket like intellect of Ram. This is why after the birth of eight Narayans, after the revelation of eight Narayans, who are connected with the eight deities, the ninth one, Ram is revealed. So, Ram *navami* is celebrated.

समय- 20.50-22.18

जिज्ञासु:- बाबा श्वासों-श्वास में याद और सेवा का मतलब क्या है?

बाबा :- जो भी श्वास आये, जो भी श्वास जाये उसमें देखना है हमने सेवा क्या की? याद रही कि नहीं रही? ऐसा हो सकता है या नहीं हो सकता है? श्वांस ली, श्वांस छोड़ी, हर श्वांस लेने में और छोड़ने में सेकेण्ड-सेकेण्ड बाप की याद रह सकती है या नहीं रह सकती है? रह सकती है। तो जहाँ याद होगी वहाँ सेवा होगी या नहीं होगी? (किसी ने कहा-ज़रूर होगी।) सेवा तो जरुर होगी। तो हर श्वास में

[2] Ram's birthday on the ninth day of the light half of the month *Cait* (March-April)
[3] Krishna's birthday on the eighth day of the dark half of the month *Bhadon* (August-September)
[4] A villainous character in the epic Mahabharata

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

याद भी समाई हुई हो। सेवा भी समाई हुई हो। डिससर्विस न समाई हुई हो। कोई वाचा ऐसी न निकले जो देहभान में निकल जाये और डिससर्विस हो जाये। अपनी आत्मा की डिससर्विस हो जाये, चाहे दूसरी आत्माओं की डिससर्विस हो जाये। उसे नहीं कहेंगे श्वासों-श्वास याद।

Time: 20.50-22.18
Student: Baba what is meant by remembrance and service in every breath?
Baba: You should check every inhaled and exhaled breath what service you did. [You should check:] Did we remember [Baba] or not? Can it be possible or not? You inhaled, you exhaled; during every inhalation and exhalation can you remember the Father every *second* or not? You can. So, will service take place where there is remembrance or not? (Someone said: It will definitely take place.) Service will definitely take place. So, there should be remembrance as well as service in every breath. There should not be *disservice*. You should not speak any word which is spoken under the influence of body consciousness and causes *disservice*, either the *disservice* of your own soul or the other souls. That will not be called remembrance in every breath.

समय- 22.20-27.46

जिज्ञासु:- बाबा, आदि में बाबा ने युगल में आकर के सुनने-सुनाने और समझने-समझाने का पार्ट बजाया। तो आदि सो अन्त होना चाहिए ना। तो अन्त में ये पार्ट कैसे होता है?

बाबा:- आदि कब और अन्त कब?

जिज्ञासु:- ये तो संगम का ही है ना।

बाबा:- संगम में 100 साल का संगम। और उसमें एक संगम है सामान्य और एक संगम है पुरुषोत्तम संगमयुग जहाँ से नम्बरवार पुरुषों में उत्तम बनने वाली आत्मायें प्रत्यक्ष होती हैं। पहले तो ये समझना पड़े कि आदि संगम कौन सा और अंत संगम कौन सा| अंत माने सम्पन्न। और आदि माने सम्पन्न तो था, क्योंकि तीनों मूर्तियाँ उस समय मौजूद हैं आदि में भी। तीन मूर्तियों में एक मूर्ति है छोटी माँ, एक मूर्ति है बड़ी माँ, और एक मूर्ति है बाप। मूर्ति माना ही साकार। आपके प्रश्न का मूल क्या है?

Time: 22.20-27.46
Student: Baba, in the beginning Baba came in a couple and played the part of listening and narrating and understanding and explaining; so, whatever took place in the beginning should happen in the end, shouldn't it? So, how does this part take place in the end?
Baba: When is the beginning and when is the end?
Student: It is about this Confluence [Age] itself, isn't it?
Baba: There is hundred years Confluence Age. And in that, one Confluence (*sangam*) is ordinary and the other is *Purushottam Sangamyug* (Elevated Confluence Age), where the souls which become elevated among all the souls (*purush*) at different levels are revealed. First you will have to understand which the initial confluence is and which the last confluence is. Last means complete and initial means … it was certainly complete because all the three personalities are present at that time, in the beginning as well. One personality among the three personalities is the junior mother; one personality is the senior mother and one personality is the Father. Personality (*muurti*) itself means corporeal. What is the root of your question?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु:- ... में भी सुनना और सुनाना, समझना-समझाना ये पार्ट हाता है क्या?
बाबा:- सुनना-सुनाना पहले होता है, समझना-समझाना मध्य में होता है। और सुनने के साथ समझना-समझाना...। समझने-समझाने में तो अन्तर होगा लेकिन सुनने के साथ समझना भी कभी-कभी हो जाता है। अगर बुद्धिमान है, एक कान से सुनता जावेगा और साथ-साथ समझता भी जावेगा। वो आदि में हुआ लेकिन प्रैक्टिकल करना नहीं हो पाता। सुनना और समझना साथ-साथ हो सकता है लेकिन प्रैक्टिकल करने में टाईम लगेगा। वो अन्त की बात है। जहाँ सुनना भी हो जाता है सुनने-सुनाने वाली शख़्सियत भी मौजूद है जिसे कहते हैं बड़ी माँ। क्या? सुनती है और सुनाती भी है। सुनने में और सुनाने में उससे जास्ती तीखा कोई होता ही नहीं। इसलिये कहा जगदम्बा। जगदम्बा सो लम्बी जीभ वाली क्या बनती है? महाकाली बनती है। उससे बड़ी वाचा की देवी और कोई होती ही नहीं। वाचा चलाने में उससे कोई नम्बर आगे नहीं ले सकता। परन्तु धारणा में पीछे रह जाती है।

Student: Does the part of listening and narrating, understanding and explaining take place … as well?
Baba: Listening and narrating takes place first. Understanding and explaining takes place in the middle and as regards understanding and explaining along with listening... There will be a gap between understanding and explaining, but sometimes understanding takes place along with listening. If someone is intelligent, he will go on listening through one ear and simultaneously understand as well. That happened in the beginning, but doing it in practice does not happen. Listening and understanding can take place simultaneously, but it will take time to do it in practice. That is about the end. When listening also takes place... The personality that listens and narrates is present. She is called the senior mother (*bari maa*). What? She listens as well as narrates.There is nobody sharper than her in listening and narrating. This is why she is called Jagdamba. What does Jagdamba with a long tongue become? She becomes Mahakali. There is no other *devi* of words greater than her. Nobody can achieve a higher *number* (rank) than her in speaking. But she lags behind in *dhaaranaa*.

तो धारणा में आगे जाने वाली भी कोई देवी है। जिसको कहते हैं, अव्यक्त वाणी में जिसके लिये बोला है पहली अव्यक्त वाणी में, भारत माता शिव शक्ति अवतार अन्त का ये नारा है। तो अन्त में तीनों ही बातें सम्पन्न हो जाती हैं। सुनने-सुनाने वाली भी मिलती है, समझने-समझाने वाला भी मिल जाता है और प्रैक्टिकल जीवन में सबसे पहले धारणा करने वाली भी वहाँ मौजूद होती है। ये तीनों मूर्तियाँ आदि में भी मौजूद थीं। शिव अकेला नहीं आता है। तीनों मूर्तियों के साथ आता है। और अन्त में भी जब प्रत्यक्षता होगी तो सुनने-सुनाने वाली मूर्ति भी होगी, समझने-समझाने वाली जो निमित्त मूर्ति है वो भी होगी और प्रैक्टिकल करने-कराने वाली मूर्ति भी मौजूद होगी। उसे कहेंगे अन्त। नहीं तो कलयुग में और सतयुग के आदि में कोई अन्तर ही न रहे।

So, there is also a *devi* who goes ahead in *dhaaranaa*. For her it has been said in the *avyakt vani*, the first *avyakt vani* that Mother India, the incarnation of Shiva *shakti* (consort of Shiva) is the slogan of the end. So, all the three tasks are completed in the end. There is the one who listens and narrates, the one who understands and explains and the one who does *dhaaranaa* in the life in

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

practice first of all is also present there. All these three personalities were also present in the beginning. Shiva does not come alone. He comes with all the three personalities. And when the revelation takes place even in the end, then the personality that listens and narrates, the personality that is instrument for understanding and explaining as well as the personality which does [the work] in practice and enables others to do it in practice will also be present. That will be called the end. Otherwise there will not be any difference between the Iron Age and the beginning of the Golden Age.

समय- 27.57-31.18

बाबा:- प्रश्न आया है- एडवांस में जो अचानक शरीर छोड़ते हैं उनको तुरन्त शरीर मिलेगा या भटकना पड़ेगा?

उत्तर:- अचानक शरीर छोड़ने वालों में भी दो तरह के होते हैं। एक तो होते हैं जैसे युद्धभूमी में युद्ध करते-2, सत्य-असत्य के लिये युद्ध करते हैं न। तो युद्ध करते-2 जो शरीर छोड़ते हैं उन्होंने अपने लिये शरीर छोड़ा या अपने देश के लिये शरीर छोड़ा? परकल्याण के लिये शरीर छोड़ा या स्वार्थ के लिये शरीर छोड़ा? (किसी ने कहा- परकल्याण के लिए शरीर छोड़ा।) तो उनको सूक्ष्म शरीर का बन्धन बंधना चाहिये या नहीं बंधना चाहिए? नहीं बंधता है। ऐसे ही यहां ज्ञान में जो स्वार्थ के लिये शरीर छोड़ते हैं, हठ में आ जाते हैं, अगर हमको ये चीज़ नहीं मिलेगी , हम प्राण छोड़ देंगे, हमको ये व्यक्ति नहीं मिलेगा तो हम प्राण छोड़ देगें। तो ऐसे हठ पूर्वक जो शरीर छोड़ते हैं स्वार्थ के लिये उनको सूक्ष्म शरीर के बन्धन में बंधना पड़ता है। और जो परमार्थ के लिये शरीर छोड़ते हैं अचानक उनको सूक्ष्म शरीर के बन्धन में नहीं बंधना पड़ता है।

Time: 27.57-31.18
Baba: A question has been asked: Will those who leave their body suddenly in the advance [party] get a body immediately or will they have to wander?
Answer: Even among those who leave their body suddenly there are two kinds [of people]. One kind of people is those like the people who fight in a battlefied; people fight a war for truth or untruth, don't they? So, did those who leave their body while fighting a war leave their body for themselves or for the sake of their country? Did they leave their body for the benefit of others or for selfish reasons? (Someone said: They left the body for the benefit of others.) So, should they be bound in the bondage of the subtle body or not? They are not bound. Similarly, here in the knowledge, those who leave their body for selfish reasons, those who become obstinate [and say:] If we do not get this particular thing, we will leave our body, if we do not get this particular person, we will die, so those who leave their body obstinately like this, for selfish motives have to be bound in the bondage of the subtle body. And those who leave their body for the benefit of others suddenly do not have to be bound in the bondage of the subtle body.

और जो सूक्ष्म शरीर के बन्धन में बधंते हैं उनको पुरुषार्थ करने का वो समय, जिसमें उन्होंने सूक्ष्म शरीर से कार्य किया है उसमें न पाप बनता है और न पुण्य बनता है। पुरुषार्थ करने का समय नहीं बनता। लेकिन आत्मा जो है वो अनुभवी तो बनती है। क्या? वो अनुभव के संस्कार ले जा करके दुबारा जन्म लेती है। और जन्म ले करके लास्ट से फास्ट पुरुषार्थ करती है। इसलिये एडवांस में आने वाले अगर यदा-कदा सूक्ष्म शरीर धारण भी करते हैं तो उनको उतना घाटा नहीं है, जितना बेसिक में

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

चलने वाले शरीर छोड़ते हैं अचानक उनको घाटा होता है। उनका तो एक या आधा जन्म ही कम हो जावेगा। और इनको तो पूरे 84 जन्म मिलते हैं।

And as regards those who are bound in the bondage of the subtle body, they neither accrue sin nor merit in the time of making *purushaarth*, when they worked through the subtle body. Their time is not passed in making *purushaarth*. But the soul does become experienced. What? It is reborn with the *sanskaars* of experience. And after being born, it makes *fast purushaarth* despite coming in the *last* [period]. This is why, if those who follow the advance [knowledge] take on a subtle body by chance, they do not suffer as much loss as those who leave their body suddenly while following the basic [knowledge]. In their case (of those who leave their body following the basic knowledge) one or half birth will be totally reduced. And these ones (those who leave their body following the advance knowledge) have the complete 84 births.

समय- 31.21-33.27

जिज्ञासु:- सूक्ष्म शरीर लेना भी हिसाब-किताब के अनुसार ही होता है ना बाबा?

बाबा:- पूर्व जन्मों में कोई न कोई हिसाब किताब बांधा है।

जिज्ञासु:- सूक्ष्म शरीर तो लिया है हिसाब-किताब के अनुसार ही तो फिर जो कर्म होता है उसके अनुसार...

बाबा:- जिसके शरीर में प्रवेश होके कर्म होता है।

जिज्ञासु:- उसका लेप-क्षेप तो उस आत्मा को नहीं लगता है...

बाबा:- जिसका अपना शरीर ही नहीं है उसको लेप-क्षेप नहीं लगेगा। लेप-क्षेप उसको लगता है जिसका अपना शरीर है। सूक्ष्म शरीर मिलता ही इसलिये है कि सूक्ष्म शरीर धारण करने वाली जो आत्मा है उसके पाप कर्मों का बोझा ज्यादा न चढ़ने पाए। जितने भी सूक्ष्म शरीर धारण करने वाली विधर्मी आत्मायें हैं वो सब 84 जन्म लेने वाली हैं या कम जन्म लेने वाली हैं? कम जन्म लेने वाली हैं। सूक्ष्म शरीर के बन्धन में आना ये कोई अच्छी बात नहीं है। ब्रह्मा जैसी आत्मा को भी घाटा पड़ गया। क्या घाटा पड़ गया? जो प्राप्ति हुई, भले सतयुग के महाराजा बन गए लेकिन संगमयुग में जो भगवान से डायरेक्ट प्राप्ति होनी चाहिए, भगवान से ज्ञान लेना चाहिए वो ज्ञान डायरेक्ट में नहीं ले सके। माना सूक्ष्म शरीर जो धारण करने वाली जो आत्मायें हैं वो अपना लक्ष्य पूरा नहीं धारण कर पातीं। कमी रह जाती है।

Time: 31.12-33.27
Student: Baba, someone gets a subtle body only because of his karmic accounts, doesn't he?
Baba: He has created some karmic acount in the past births.
Student: He has taken a subtle body because of karmic accounts, then the actions performed according to it....
Baba: The actions are performed by entering some body.
Student: That soul is not affected [by the actions]…
Baba: The one who does not have a body of his own will not be affected [by the actions]. The one who has his own body is affected [by the actions]. Someone gets a subtle body only because the soul that takes on the subtle body should not accrue more burden of sins. Do all the *vidharmi*[5] souls

[5] Those who beliefs and practices are opposite to that set by the Father

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

that take on a subtle body have 84 births or fewer births? They have fewer births. It is not good to be bound by a subtle body. Even a soul like Brahma suffered loss. What loss did he suffer? The attainment that he made; he may have become the Maharaja (emperor) of the Golden Age but [he could not obtain] the direct attainments from God that he should have obtained in the Confluence Age, he could not obtain the knowledge directly from God that he should have obtained. It means that the souls that take on a subtle body are unable to achieve their aim completely. There remains a shortcoming [in them].

समय- 33.39-42.38

बाबा:- (प्रश्न पढ़ते हुए) राजा हरिश्चन्द्र को क्या बनना पड़ा? चाण्डाल बनना पड़ा। तो ये किस आत्मा का पार्ट है?

उत्तर:- (किसी ने कहा- रूद्रमाला का।) रुद्रमाला में तो ढ़ेर आत्मायें हैं। ये पार्ट किसका है? शास्त्रों में तो सतयुग के आदि में राजा हरिश्चन्द्र का राज्य दिखाया है। (किसी ने कहा- आदि में विश्वमहाराज था अंत में चाण्डाल बनेगा।) जो चाण्डाल का पार्ट है वो किसका है? पहले-पहले चाण्डाल कौन बनता है? जो पहला-2 ब्राह्मण सो पहला-2 देवता, जो पहला-2 देवता सो पहला -2 क्षत्रीय, जो पहला क्षत्रीय सो पहला वैश्य, जो पहला वैश्य सो पहला शूद्र और शूद्रों में भी आखरीन में सारे मुर्दों को मारने वाला कौन? आखरीन में सारी दुनिया मुर्दा होगी या नहीं होगी? (जिज्ञासु - ज़रूर होगी।) ऐसा कौन सा टाइम होता है जब सारी दुनिया मुर्दा होती है, सब कब्रदाखिल होते हैं? कब्रदाखिल का गायन कौन से धर्म में है? मुस्लिम धर्म में कब्रदाखिल का गायन है। उनके यहां चौदहवीं सदी जब पूरी होती है उसके बाद कोई तारीख ही नहीं है। ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियां में सारी दुनियां कब्र दाखिल कब होती है? सब मिट्टी में देहभान की मिट्टी में दब के मर जाते हैं। कोई जिन्दा नहीं रहता। तब अल्लाह ताला आ करके कब्र में से एक-एक को जगाते हैं। वो कौन सा टाइम है? अरे! अज्ञान की नींद में से कब से जगना शुरु होता है? 76 से। उस समय दुनिया वालों की तो बात ही छोड़ दो। जो ज्ञान में चलने वाले ब्राह्मण हैं वो भी सब क्या हो जाते हैं? मुर्दा हो जाते हैं। सब देहभान की मिट्टी में दबे हुए होते हैं।

Time: 33.29-42.38

Baba: (Baba reads a question.) What did King Harishchandra have to become? He had to become a *caandaal*[6]. So, which soul plays this part?

Answer: (Someone said: [The soul] of the *Rudramala*.) There are numerous souls in the *Rudramala*. Who plays this *part*? The kingdom of King Harishchandra has been depicted in the beginning of the Golden Age in the scriptures. (Someone said: In the beginning he was the World Emperor and at the end he will become *caandaal*.) Who plays the *part* of *caandaal*? Who becomes the first *caandaal*? The first Brahmin becomes the first deity, and the one who is the first deity becomes the first *Kshatriya* (warrior), the first *Kshatriya* becomes the first Vaishya and the first Vaishya becomes the first Shudra[7]; and among the Shudras also who creamates all the dead bodies in the end? Ultimately, will [the people of] the entire world become corpses or not? (Student: They will definitely become.) At which time does the entire world become a corpse, [when] does everyone enter a grave? In which religion is it famous [that people] enter the grave? It is famous in the Muslim religion [that people] enter the grave. There is no date for them after the fourteenth century ends. When does the entire world enter the grave in the Confluence Age Brahmin world?

[6] People from a lower caste among Hindus who cremate dead bodies
[7] Untouchable; member of the fourth and the lowest division of Indo-Aryan society.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Everyone dies by being buried under the soil of body consciousness. Nobody is left alive. Then *Allah Tala* (God) comes and wakes up everyone from the grave. Which *time* is it? *Arey*? When do souls start awakening from the sleep of ignorance? From 76. Leave the topics of the people of the world at that time. What do all the Brahmins following the path of knowledge become? They become corpses. Everyone is buried under the soil of body consciousness.

तो पहले-पहले कोई मुर्दे में तो जान फूंकी होगी? कौनसे में जान फूंकी जाती है? राम वाली आत्मा। जो पूछा है कि सत्य हरिश्चन्द्र चाण्डाल बनता है और बाबा ने जवाब एक ही वाक्य में दे दिया, दुनिया की ऐसी कोई बात नहीं जो तेरे ऊपर लागू न होती हो। अरे! दुनिया में ढ़ेरों ऐसे हैं जिनका चाण्डाल का पार्ट होता है। जन्म-जन्मान्तर के चाण्डाल बनते हैं (या) सिर्फ एक ही जन्म में चाण्डाल बनते हैं? (किसी ने कुछ कहा।) अच्छा! मुर्दों को जलाने वाले हर जन्म में नहीं होते? जन्म-जन्मान्तर चाण्डाल होते हैं। उन सब चाण्डालों का पहला बाप कोई तो होता होगा? उनका भी कोई बीज होगा कि नहीं होगा? (किसीने कहा - होगा।) दुनियां के बड़े-बड़े राजाओं का कोई बीज है। दुनियां के जितने भी ब्राह्मण हैं उनका भी कोई बीज है। दुनियां के जितने बडे देवताये हैं उन 33 करोड़ देवताओं का भी कोई एक बीज है। तो चाण्डालों का भी कोई बीज होगा, बाप होगा या नहीं होगा? वो तो सारी दुनियां का बाप है। तो चाण्डालों का बाप नहीं बनना चाहिए? खराब बात हो जायेगी क्या? जैसे ब्रह्माकुमारियां कहती हैं कि राम सीता फेल हो गए। क्या? राम सीता फेल हो गए तो उनको दास दासी बनना पड़ेगा। ये दास-दासी बनना अच्छी बात हुई या खराब बात हो गई? (किसी ने कहा- अच्छी बात है।) क्यों? दास-दासी बनना तो बहुत खराब बात है। अरे! दुनिया की सारी आत्मायें अपने बच्चों की दास-दासी बनती हैं। तो राम-सीता भी अगर सतयुग के आदि में जो प्रिंस-प्रिसेज पैदा होते हैं, उनके माँ-बाप में रुप में दास-दासी फर्स्ट क्लास बनते हैं। तो खराब बात हो गई क्या? बहुत अच्छी बात हो गई।

So, He would have breathed life into some corpse first of all? In which corpse is life breathed? The soul of Ram. It has been asked: Satya Harishchandra becomes a *caandaal*. And Baba gave the reply in only one sentence. There is nothing in this world that is not applicable to you. *Arey*, there are numerous people in the world who play the *part* of *caandaal*. Do they become *caandaals* for many births [or] do they become *caandaal* in only one birth? *Acchaa!* Are there not people who burn the dead bodies in every birth? There are *caandaals* in every birth. There must be the first father of all those *caandaals*? Will there be a seed of even them or not? There is a seed of the big kings of the world.There is a seed of all the Brahmins of the world as well. There is a seed of all the great deities of the world, those 33 crore (330 million) deities as well. So, will there be a seed, a father of the *caandaals* as well or not? He is the Father of the entire world. So, should he not become the father of the *caandaals*? Will it be something bad? Just as the Brahmakumaris say that Ram and Sita failed... What? Ram and Sita failed. So, they will have to become servants and maids. Is it good to become servants and maids or is it bad? (Someone said: It is a good thing.) Why? It is a very bad thing to become servants and maids! *Arey!* All the souls of the world become servants and maids for their children. So, if Ram and Sita also become the *first class* servants and maids in the form of parents for the prince and princess who are born in the beginning of the Golden Age, is it a bad thing? It is a very good thing.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

ड्रामा है, ड्रामा में कोई गधे का पार्ट बजाता है गाय, बैल, भैंस की जूठी बची हुई घास खा लेता है, खाता है गधे का पार्ट बजाने वाला। कोई महाराजा का पार्ट बजाता है, बजाता है ना। अगर महाराजा का पार्ट बजाने वाला बढ़िया पार्ट न बजावे और लोग तालियाँ बजा देवें और गधे का पार्ट बजाने वाला हूबहू आवाज़ वैसी ही करे और हूबहू गधे की तरह एक्ट करे, लोग वाह-वाही करे। तो अच्छा पार्ट हुआ (या) खराब पार्ट हुआ? गधे का पार्ट बजाने वाले को इनाम मिलेगा या महाराजा का पार्ट बजाने वाले को इनाम मिलेगा? गधे का पार्ट बजाने वाले को इनाम मिल जावेगा। ऐसे ही ये दुनिया एक रंग मंच है रंग मंच पर जिसको जो पार्ट मिला हुआ है वो अपना पार्ट बढ़िया करके बजावे। चाण्डाल का पार्ट हो तो भी, दास-दासी का पार्ट हो तो भी और महाराजा, महारानी का पार्ट हो तो भी अव्वल नम्बर वन पार्ट बजाकर दिखावे, तो कहेंगे हीरो पार्टधारी। और हीरो पार्टधारी हो और खुदा न खास्ता उसको कोई नीचा पार्ट बजाना पड़े, पार्ट बजाने वाले ऐन मौके पर बीमार पड़ जाते हैं ना। पड़ते हैं कि नहीं? पड़ते हैं। तो गधे का पार्ट बजाने वाला बीमार पड़ गया और हीरो पार्टधारी मौजूद है, फ्री है, उसको वो पार्ट दे दिया जाय और वो कहे हम नहीं बजा पायेंगे तो हीरो पार्टधारी कहा जायेगा? नहीं कहा जावेगा।

There is a *drama*; someone plays the *part* of a donkey in a *drama*. The person playing the *part* of a donkey eats the grass left over by cows, bulls, buffaloes. Someone plays the *part* of an emperor; he plays, doesn't he? If the person playing the *part* of an emperor does not play the *part* well and people [simply] clap. And if the person playing the *part* of a donkey produces exactly the same sound [a donkey produces] and acts exactly like a donkey and people praise him, then is it a good *part* or a bad *part*? Will the person playing the *part* of a donkey get the prize or will the person playing the *part* of the emperor get the prize? The person playing the *part* of a donkey will get the prize. Similarly, this world is a stage. Everyone should play the *part* assigned to him well. Even if it is the *part* of a *caandaal*, a servant or a maid, an emperor or an empress, he should give the best performance; then he will be called a *hero* actor. [Suppose] someone is a *hero* and if by chance he has to play a low *part*... [Some] actors fall ill at the last moment, don't they? Do they [fall ill] or not? They do fall ill. So, if the person playing the *part* of a donkey falls ill and the *hero* actor is present, he is *free*, he is given that *part* [to play], and if he says that he will not be able to play that *part*, then will he be called a *hero* actor? He will not be called so.

वार्तालाप नं 611, दिनांक 09.08.2008, जयनगर
Disc.CD No.611, dated 09.08.2008, at Jaynagar

समय-00.14-03.49

जिज्ञासु:- बाबा, स्वर्ग का रचयिता आया लेकिन बच्चों को नर्क का अनुभव है तो क्या उनका पुरूषार्थ वीक है?

बाबा:- इसलिये तो बाबा कहते हैं हैविनली गॉड फादर आया हुआ है तो हम नर्क में क्यों बैठे हैं? कारण कुछ होगा या नहीं होगा? (किसी ने कहा- ज्ञान की कमी है।) ज्ञान की कमी है? माना बाप को पहचाना नही हैं? (किसी ने कहा- कम्पलीट निश्चय नहीं है।) अगर कोई ने नहीं पहचाना, बाप को अगर कोई ने पहचाना ही नहीं, तो फिर स्वर्ग आयेगा ही नहीं। बाप तो कहते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ करने वाले बच्चे हैं। नम्बरवार खुशी में रहने वाले बच्चे हैं। संगमयुग मौजों का युग है या नर्क के

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

दुःखों में रहने का युग है? (किसी ने कहा- मौजों का युग।) तो मौज में कोई है ही नहीं। माना बाप जो श्रीमत देते हैं उस श्रीमत पर पूरा-पूरा चलते नहीं हैं, कुछ न कुछ अवज्ञायें करते जरुर हैं इसलिये सुख का अनुभव नहीं कर पाते। सोचने की बात है। करोड़पति बाप का बच्चा हो फिर पैसे-2 के लिये मोहताज हो, तो लोग क्या समझेंगे? बाप के कन्ट्रोल से बाहर है। यही हालत है। बाप आया हुआ है, स्वर्ग का रचयिता है, बच्चे नर्क में हैं, दुखों का अनुभव कर रहे हैं। कारण क्या है? अभी बाप के बच्चे ब्राह्मण बने ही नहीं हैं। इसलिये बोला अन्त में सबको अनुभव होगा। क्या? अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। अभी तो निश्चय-अनिश्चय के चक्र में डोला खाते रहते हैं। जैसे बोला कि ज्ञान नहीं है, पूरी बाप की पहचान नहीं है कि बाप है क्या, तो अवज्ञायें करते रहते हैं।

Time: 00.14-03.49
Student: Baba, the creator of heaven came, but children experience hell. Is their *purushaarth* weak?
Baba: That is why Baba says that if the *heavenly God* the *Father* has come, why are we sitting in hell? Will there be any reason or not? (Someone said: There is lack of knowledge.) There is lack of knowledge? It means they have not recognized the Father? (Someone said: They don't have complete faith.) If no one has recognized, if no one has recognized the Father at all, then heaven will not come at all. The Father says that there are children who make numberwise (more or less) *purushaarth*. There are children who remain in joy number wise. Is the Confluence Age an age of joy or an age to live in the sorrow of hell? (Someone said: Age of joy.) But nobody is in joy at all. It means that they do not follow the *shrimat* given by the Father completely. They definitely violate some [shrimat]. This is why they are unable to experience happiness. It is something to think about. If someone is a millionaire's child and he is needful for every single *paisa*[8], then what will people think? He is out of his father's *control*. It is the same situation [here]. The Father has come. He is the Creator of heaven. Children are in hell. They are experiencing sorrow. What is the reason? Now they have not at all become the children of the Father, the Brahmins. This is why it has been said that everyone will experience in the end: Ask the *gop-gopis* about the supersensuous joy. Now they keep swinging in the cycle of faith and doubt. For example, it was said that if there is lack of knowledge, if there isn't the complete recognition of the Father 'who the Father is', then they keep disobeying [the Father].

समय-04.02-06.08

जिज्ञासु:- बाबा, आत्मा शरीर छोड़ने के बाद कुछ देख सकती है और कुछ सोच सकती है क्या?

बाबा:- शरीर छोड़ने के बाद कोई शरीर में प्रवेश करके देख भी सकती है, सोच भी सकती है।

जिज्ञासु:- सूक्ष्म शरीर के द्वारा देख सकती है, कुछ सोच सकती है क्या?

बाबा:- सूक्ष्म शरीर भी तो प्रवेश करता है।

जिज्ञासु:- बिना प्रवेश करके?

बाबा:- बिना प्रवेश किये सिर्फ अपने घोड़े को पहचान लेती है। जैसे शिवबाबा आता है तो दुनियां को कैसे देखता है? प्रवेश करता है तो देखता है।

[8] Fraction of rupee; now worth nothing.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

दूसरा जिज्ञासु:- बाबा, लेकिन और आत्मायें जब मनुष्य शरीर छोड़ते हैं तो उनको सूक्ष्म शरीर तो है न बाबा?

बाबा:- सूक्ष्म शरीर होता है।

दूसरा जिज्ञासु:- सूक्ष्म शरीर से दूसरों की बातें नहीं सुन सकते हैं बाबा?

बाबा:- सूक्ष्म शरीर से दूसरों की बातें नहीं सुन सकते? फिर प्रवेश करने की क्या दरकार?

दूसरा जिज्ञासु:- बातें भी नहीं कर सकते?

बाबा:- अरे! ☺

जिज्ञासु:- सूक्ष्म शरीर होते हैं ना ।

बाबा:- हाँ, सूक्ष्म शरीर है, लेकिन कोई-कोई को अनुभव होता है कि ये बोल रहा है। आवाज सुनाई पड़ती है। वो भय का भूत होता है। अगर सुनाई पड़े तो सबको सुनाई पड़े। कोई को सुनाई पड़ती है कोई को नहीं सुनाई पड़ती है।

Time: 04.02-06.08
Student: Baba, can a soul see and think anything after leaving its body?
Baba: It can see as well as think by entering some body after leaving its own body.
Student: Can it see and think through the subtle body?
Baba: The subtle body also enters [someone].
Student: [Can it do this] without entering [someone]?
Baba: Without entering it just recognizes its horse (the body which it has to enter). For example, when Shivbaba comes, how does He see the world? He sees when He enters [someone].
Another student: Baba, but when a human soul leaves its body it has a subtle body, doesn't it?
Baba: It has a subtle body.
The other student: Baba, Can't it listen to the words of others through the subtle body?
Baba: It can't listen to others'words through the subtle body? Then where is the need to enter [someone]?
The other student: Can't it even speak?
Baba: Arey! ☺
Student: It has a subtle body, doesn't it?
Baba: Yes, it has a subtle body, but some people experience that someone is speaking. They hear sounds. That is a ghost of fear. If it is audible, it should be audible to everyone. It is audible to someone and not audible to someone else.

समय-06.15-08.45

जिज्ञासु ने कुछ पूछा।

बाबा:- 64 जोगनी प्रसिद्ध है।

जिज्ञासु:-63

बाबा:- ये तो सुना नहीं। 64 जोगनियाँ प्रसिद्ध हैं।

जिज्ञासु:- उसमें तीन को अलग करके बहुत मान्यता देते हैं।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा:- तीन को बहुत मान्यता देते हैं? तीन तो जोगनियाँ हैं ही खास। रुद्रमाला जो पहचानने वाले हैं वही जोगी विशेष होते हैं या और दूसरे होते हैं? और रुद्रमाला में तीन देवियाँ ही तो मुख्य हैं। सरस्वती, लक्ष्मी, और जगदम्बा।

Time: 06.15-08.45
Student asked something.
Baba: 64 *Joginis* are famous.
Student: 63.
Baba: I have not heard about this. 64 *Joginis* are famous.
Student: Three [*Joginis*] are separated from the rest and given a lot of respect.
Baba: Three [*Joginis*] are given a lot of respect? Three *Joginis* are anyway special. Do those who recognize the *Rudramala* are especially *Jogis* or anyone else? And only the three *devis* are important in the *Rudramala.* Saraswati, Lakshmi and Jagdamba.

समय-08.49-12.26

जिज्ञासु:- बाबा, लौकिक मंन्दिरो में मूर्तियों को पंचामृत से अभिषेक करते हैं। पंचामृत आत्माओं का निशानी होते हैं या... इसका बेहद का अर्थ क्या है?

बाबा:- पाँच अमृत हैं। अमृत किसे कहा जाता है? अमृत तो ज्ञान ही है। जो आत्मा मुर्दे से सालिम बन जाती है। पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बन जाती है। तो पाँच अमृत हैं। एक तो गौ का घृत। घृत कहा जाता है याद को। जितनी याद करेंगे बुद्धि शुद्ध बनती जायेगी। दूसरा दूध को। ये ज्ञान दुग्ध है, गाय का दूध श्रेष्ठ माना जाता है। बाबा भी कहते हैं कन्याओं- माताओं के मुख से ज्ञान अच्छा होता है सुनना। वो चाहे गंगा हो और चाहे वैष्णवी देवी हो। फिर मिष्ठान्न को कहते हैं मीठा। बाबा भी कहते हैं ऐसा पुरुषार्थ करो जो खूब मीठे बनो, नाम मात्र को भी कडुआपन न रहे। अगर भरपूर मीठे बन गए तो जैसे नारायण बहुत मीठे हैं वैसे ही नारायण को सब प्यार करते हैं। नारायण के सबसे संस्कार मिल जाते हैं। और कोई ऐसा नहीं जिसके साथ पूरे संस्कार सबसे मिल जाते हों । नारायण को सब पंसद करते हैं। तो किसलिये करते हैं? बहुत मीठा है। ब्रह्मा बाबा को सब पसंद क्यों करते थे सामने आके? बहुत मीठा था।

Time: 08.49-12.26
Student: Baba, in the *lokik* [world] *Pancaamrit*[9] is poured on idols in temples. Does the *Pancaamrit* represent souls or … what does it mean in the unlimited?
Baba: There are five (*paanc*) kinds of nectar (*amrit*). What is meant by *amrit?* The knowledge itself is *amrit* (nectar) [through which] a soul transforms from a corpse into the one [with a] mature [intellect]. It changes from the one with a stone like intellect (*pattharbuddhi*) into the one with a *Paaras* like intellect[10] (*Paarasbuddhi*). So, there are five nectars. One is the ghee[11] (*ghrit*) prepared from cow [milk]. Ghee means remembrance. The more you remember [the Father], the more the intellect will go on becoming pure. Second is milk. This is the milk of knowledge. Cow milk is

[9] An edible liquid consisting of five ingredients
[10] A mythical stone believed to transform anything that touches it into gold. Here, it refers to the souls who have an intellect such that just by coming in their company the other souls are transformed.
[11] Clarified butter

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

considered to be superior. Baba also says that it is good to listen to knowledge from the mouth of virgins and mothers, then whether it is Ganga or Vaishnavi Devi. Then the sweetmeat is said to be sweet. Baba also says, 'Make such *purushaarth* that you become very sweet; there should not be bitterness even for name sake'. If you become completely sweet, then just as Narayan is very sweet... so everyone loves Narayan, Narayan's *sanskaars* match with the *sanskaars* of everyone. There is nobody else whose *sanskaars* match completely with everyone. Everyone likes Narayan. So, why do they like him? He is very sweet. Why did everyone like Brahma Baba when they came in front of him? He was very sweet.

तो मिठास भी चाहिए, दूध भी चाहिए, घृत भी चाहिए और शहद भी डालते हैं। क्या? शहद कहाँ से आता है? जो मधुमक्खियाँ होती हैं उनमें प्योरिटी की पावर बहुत होती है। इतनी प्योरिटी की पावर होती है कि संगठित हो करके छोटे से घर में कितनी ढ़ेर की ढ़ेर इकट्ठी हो जाती हैं। यूनिटी की पावर है। उस यूनिटी की पावर से जो चीज तैयार करती हैं वो शहद है। साधारण मिठास से भी बहुत ऊँची किस्म की चीज़ है। तो ये पाँच चीज़ें हैं, जो डाली जाती हैं, इकट्ठी कर देते हैं तो कहते हैं... पंचगव्य जैसे होता है वैसे ही पंचामृत कहा जाता है।

So, sweetness is required, milk is required, oil is required and honey is also added [to *Pancaamrit*]. What? Where does honey come from? Honey bees have a lot of the *power* of *purity*. They have such *power* of *purity* that so many of them gather collectively in a small house. It is the *power* of *unity*. The thing that they prepare with that *power* of *unity* is honey. It is much higher than ordinary sweetner. So, these are the five things that are added, mixed. So, just as there is *pancgavya* (five liquids), similarly [this is] called *Pancaamrit*.

समय-12.34-15.46

जिज्ञासु:- बाबा, अभी तक पिछले एक जन्म का भी याद नहीं आ रहा है। 84 जन्म कब याद आएगा?
बाबा:- आपको याद नहीं आ रहा है या राम, कृष्ण आत्माओं को भी नहीं याद आ रहा है। क्यों? राम, कृष्ण की आत्माओं को, जगदम्बा को, लक्ष्मी को उनको याद आ रहा है कि नहीं याद रहा होगा? उनको याद आ रहा होगा। तो उनका नम्बर लगे पहले 84 का चक्र समझने का। फिर हमारा भी लगेगा कि नहीं लगेगा? हमारा भी लगेगा। या हम आगे? (जिज्ञासु - नहीं।) तो जब हम आगे नहीं हैं। पुरुषार्थ में हम पीछे हैं तो नम्बर भी हमारा पीछे लगेगा।

Time: 12.34-15.46
Student: Baba, we are still unable to recollect even one of our past births. When we recollect our 84 births?
Baba: Are you unable to recollect them or are the souls of Ram and Krishna unable to recollect them, too? ☺ Why? Are the souls of Ram and Krishna, Jagdamba, Lakshmi recollecting them or not? They must be recollecting them. So, first it is their *number* to understand the cycle of 84 [births]. After that will it be our *number* or not? We will also understand. Or will we be ahead? (Student: No.) When we are not ahead, when we are lagging behind in *purushaarth*, then our *number* will also be behind.

जिज्ञासु:- कौन सा आधार पर ये 84 का चक्र याद आयेगा बाबा?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा:- ज्ञान के आधार पर ही याद आयेगा। ज्ञान के ऐसे-ऐसे प्वाइन्ट्स बुद्धि में बैठ जायेंगे जिन पर मंथन करने से अपने पार्ट खुलेंगे। अभी तो बोला स्वदर्शन चक्र घुमाना है। अगर 84 के चक्र को जानना है तो क्या करना है? स्वदर्शन चक्र घुमाना हैं। हमारी आत्मा को 84 के चक्र में देखना है कहाँ-कहाँ, कैसे-कैसे पार्ट बजाया, इसी मंथन में लगे रहें। बजाय इस मंथन में लगे रहने के, एक जन्म के पेट पूर्ति के चक्कर में लगे रहते हैं। अरे मन शीशा कैसे बनेगा? मन निर्मल कैसे बने? जितना गुड़ डालेगें उतना मीठा बनेगा। क्या? इश्वरीय सेवा में जितना तन अर्पण करेंगे, धन अर्पण करेंगे, मन की ताकत अर्पण करेंगे, सगे-संम्बधियों की ताकत अर्पण करेंगे सब कुछ अर्पण करेंगे तो मन क्या बनेगा? मन दर्पण बनेगा। जो अर्पणमय, सो दर्पणमय। मन पावरफुल बनाना है तो क्या करना है? सब कुछ तेरा। अपनी चिन्ता नहीं। तो मन जरुर पावरफुल बन जावेगा। मन को ही आत्मा कहा जाता है। मन, बुद्धि ही तो आत्मा है।

Student: Baba, what is the basis for recollecting the cycle of 84 [births]?
Baba: You will recollect it only on the basis of knowledge. Such *points* of knowledge will sit in the intellect that churning on those points will reveal our parts. It was said just now that you have to rotate the *swadarshan cakra* (discus of self-realization). If you want to know the cycle of 84 [births], then what should you do? You have to rotate the *swadarshan chakra.* You have to see your soul in the cycle of 84 [births] that where and what kind of parts it played. You should remain busy in this very churning. Instead of remaining busy in this churning, you remain busy in filling the stomach for one birth. *Arey*, how will the mind become a mirror? How will the mind become pure? The more jaggery you add, the sweeter it will become. What? The more you sacrifice your body, wealth, the power of mind, the power of the relatives and everything in God's service, then what will the mind become? The mind will become a mirror. The one who is dedicated (*arpanmay*) is like a mirror (*darpanmay*). What should you do if you have to make your mind *powerful*? [You should think:] Everything is yours. If there is no worry about the self, the mind will definitely become *powerful*. The mind itself is called the soul. The mind and intellect itself is the soul.

समय-15.52-16.29

जिज्ञासु:- बाबा, बाप को पहचानने का संस्कार सबमें कैसे बनाना है**?**

बाबा:- बनी बनाई बन रही, अब कछु बननी नाय। 63 जन्म में जितना भगवान की तरफ दूसरों के चित्त को मोड़ने का प्रयास किया है और अपने चित्त हो जितना भगवान की तरफ मोड़ने का प्रयास किया है वो ही संस्कार यहां भी उदित होते रहते हैं।

Time: 15.52-16.29
Student: Baba, how can we bring the *sanskaars* of recognizing the Father in everyone?
Baba: Whatever was pre-determined is being enacted; nothing new is to be enacted now. The more you have made efforts to turn others' mindtowards God in the 63 births and the more efforts you have made to turn your mindtowards God, the same *sanskaars* keep emerging here.

समय- 16.37-20.17

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु:- बाबा, शकुन्तला का क्लेरिफेकेशन एक कैसेट में दिया है। शकुनि माने ज्ञान-योग कें पंख से उड़ने वाली।

बाबा:- चिड़िया। हाँ।

जिज्ञासु:- उनके अन्डर में रहने वाली, छत्र छाया में रहने वाली... शकुंतला का क्लेरिफिकेशन।

बाबा:- शकुनि माने पक्षी।

जिज्ञासु:- माना अष्टदेवों के अन्डर में रहने वाली?

बाबाः- शकुनि माने पक्षी। पक्षी माने जो ऊँची उड़ान भरते हैं, ज्ञान-योग के पंखों से उड़ते हैं। ज्ञान योग के पंखों से जो उड़ते हैं उनके नीचे रहने वाली।

जिज्ञासु:- किसको लागू होता है बाबा?

बाबा:- अरे! शकुंतला की संतान कौन था? (किसी ने कहा- भरत।) भरत चक्रवर्ती राजा था न। उसके पिता का नाम क्या था? (किसी ने कहा- दुष्यंन्त।) दुष्यंत कौन है? शिव। तो शिवबाबा का प्रैक्टिकल रुप क्या है? अरे! शंकर। जो शंकर है वही शिवबाबा का प्रैक्टिकल रुप है। तो सबसे जास्ती ज्ञान योग के पंखों से उड़ने वाला कौन है? राम वाली आत्मा। उसके अन्डर में सबसे ज्यादा काम करने वाला कौन है? राम वाली आत्मा के श्रीमत पर सबसे जास्ती कौन चलता है? सबसे ज्यादा फालो कौन करने वाला है? छोटी मम्मी। तो शंकुतला हो गई।

Time: 16.37-20.17
Student: Baba, the clarification of Shakuntala is given in a cassette. *Shakuni* means the one who flies with the wings of knowledge and yoga.
Baba: Bird. Yes.
Student: The one who stays under its control, protection… the clarification of Shakuntala.
Baba: *Shakuni* means a bird.
Student: Does it mean she is the one who remains under [the control] of the eight deities?
Baba: *Shakuni* means a bird. Birds mean those who fly high, those who fly with the wings of knowledge and yoga. [She is] the one who lives under [the control of] those who fly with the wings of knowledge and yoga.
Student: Baba, whom is it applicable to?
Baba: *Arey!* Who was Shakuntala's child? (Someone said: Bharat.) Bharat was an emperor, wasn't he? What was the name of his father? (Someone said: Dushyant.) Who is Dushyant? Shiva. So, what is the *practical* form of Shivbaba? *Arey*! Shankar. The one who is Shankar, he himself is the *practical* form of Shivbaba. So, who flies the most with the wings of knowledge and yoga? The soul of Ram. Which soul works the most *under* him? Who follows the *shrimat* of the soul of Ram the most? Who follows him the most? The junior mother. So, she happens to be Shakuntala.

जिज्ञासु:- भरत माना ?

बाबा:- भरत माना भरण पोषण करने वाला। सारे विश्व का भरण पोषण करता है। शिवबाबा कौन सी आत्मा को कहेंगे? शिव को कहेंगें या शंकर को कहेंगें? शिव को कहेंगें। तो शिव के अन्डर में चलने वाला राम वाली आत्मा है या लक्ष्मी वाली आत्मा है? (कोई ने कहा - राम वाली आत्मा ।) राम वाली आत्मा शिव के अन्डर में पूरा चलती है? विष पीने वाले को पूरा पवित्र कहेंगें? पूरा अंडर में चलने वाला कहेगें? (किसी ने कहा- वैष्णवी देवी।) हाँ, वैष्णवी देवी। मुख्य ज्ञान का जो आर्डर, मुख्य आज्ञा

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

है वो कौन सी है? पवित्र बनो, योगी बनो। योगी तो बना लेकिन पवित्र तो हुआ नहीं। पवित्र होने के लिये फिर किसका आसरा लेना पड़ता है? लक्ष्मी का आसरा लेना पड़ता है। तो ज्ञान योग के पंखो से उड़ने वाला हुआ शिवबाबा और उसके अण्डर में रहने वाली हुई लक्ष्मी। और उसका बच्चा कौन हुआ? (किसी ने कहा- भरत।) भरत कौन हुआ भरण पोषण करने वाला विश्व का? 'विश्व भरण पोषण कर जोई'। (किसी ने कहा- राम वाली आत्मा।) हाँ, नारायण।

Student: What is meant by *Bharat*?
Baba: *Bharat* means the one who maintains and sustains (*bharan poshan karne vaalaa*). He sustains the entire world. Which soul will be called Shivbaba? Is it Shiva or Shankar? Shiva. So, is it the soul of Ram or the soul of Lakshmi who works *under* Shiva? (Someone said: The soul of Ram.) Does the soul of Ram work under Shiva completely? Will the one who drinks poison be called completely pure? Will he be said to work under [Shiva] completely? (Someone said: Vaishnavi *devi*.) Yes, Vaishnavi *devi*. What is the main *order*, main direction of knowledge? Become pure, become a *yogi*. He did become a *yogi*, but he did not become pure. Whose support does he have to take in order to become pure? He has to take the support of Lakshmi. So, Shivbaba is the one who flies with the wings of knowledge and yoga. And the one who remains *under* him is Lakshmi. And who is her child? (Someone said: Bharat.) Who is Bharat, the one who sustains the world? '*Vishwa bharan poshan kar joi*[12]'. (Someone said: The soul of Ram.) Yes, Narayan.

समय- 20.37-23.50

जिज्ञासु:- बाबा, मन, बुद्धि, संस्कार। संस्कार का क्या अर्थ है? पूर्व जन्म का संस्कार, भविष्य का संसकार...

बाबा:- पूर्व जन्म का संस्कार भविष्य का संस्कार? पूर्व जन्म का संस्कार तो... भविष्य का संस्कार तब बनेगा जब हम वर्तमान जन्म में कुछ कर्मों में एड करेंगे। तो भविष्य का बन जावेगा। पूर्व जन्म के संस्कारों के अनुसार हमें वर्तमान जन्म मिला। अच्छे संस्कार हैं तो अच्छा जन्म मिला। बुरे संस्कार हैं तो खराब जन्म मिलता है। और फिर इस जन्म में हम अच्छे कर्म करें तो आगे का जन्म अच्छा हो जायेगा, अच्छे संस्कार बन जावेंगे। जैसे अभी ब्राह्मण बन रहे हैं, ब्रह्मा के द्वारा जो श्रीमत मिल रही है उस श्रीमत को अगर हम फालो करते हैं तो हमारे अच्छे संस्कार पड़ेंगे। और जान करके भी, बूझ करके भी, समझ करके भी और फालो नहीं करते हैं तो हठयोगी, संन्यासी, ढीठ हुये या सहज राजयोगी हुए? हठयोगी हुए। हठयोगी, संन्यासी तो फिर स्वर्ग पाय नहीं सकते। दुखी होंगे। दुख के संस्कार हम ग्रहण करेंगे। दुखी दुनिया में जाकर जन्म लेंगे।

Time: 20.37-23.50
Student: Baba, mind, intellect and *sanskaar*. What does *sanskaars* mean? The *sanskars* of the previous birth, the *sanskaars* of the future [births]....
Baba: *Sanskaars* of the previous birth? *Sanskaars* of future? The *sanskaars* of the past birth… The *sanskaars* of the future will be created only when we *add* something in our actions in the present [birth]. Then it will become [a *sanskaar*] for the future. We have received the present birth as per the *sanskaars* of the previous births. If there were good *sanskaars*, we have a good birth. If the *sanskaars* are bad, then we have a bad birth. And then if we perform good actions in this birth, our

[12] The one who maintains and sustains the world.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

future birth will become good, the *sanskaars* will become good. For example, we are becoming Brahmins now; if we *follow* the *shrimat* that we are receiving through Brahma, we will assimilate good *sanskars*. And if someone does not *follow* [*shrimat*] deliberatlely, despite understanding, then are they obstinate *hathyogis*, *sanyasis* or easy *Rajyogis*? They are *hathyogis*. *Hathyogis, sanyasis* cannot achieve heaven. They will become sorrowful. They will assimilate the *sanskaars* of sorrow. They will be born in the sorrowful world.

मन सोचता है, बुद्धि फैसला करती है। और फिर हम जो कर्म करते हैं उसका मन, बुद्धि के उपर असर पड़ जाता है। हमारी आत्मा खुद ही रियलाइज करने लग पड़ती है कि हम इस योग्य हैं या नहीं योग्य हैं। बुरे कर्म करने से मन, मन रुपी दर्पण कैसा हो जाता है? मैला हो जाता है। उसमें खाद चढ़ जाती है। ज्यों-ज्यों अच्छे कर्म करते जाते हैं त्यों-त्यों दर्पण साफ होता रहता है। तो मन, बुद्धि के उपर जो असर पड़ता है अच्छे, बुरे कर्मों का वो ही संस्कार कहा जाता है। कोई ज्ञान लेने के बाद भी संस्कारों में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है। और ही ज्यादा बिगड़ैल बनते जा रहे हैं। कोई का ज्ञान लेने के बाद तुरन्त परिवर्तन दिखाई देता है।

The mind thinks and the intellect decides. And then whatever actions we perform leave an influence on the mind and intellect. Our soul itself starts realizing whether we are worthy or unworthy for it. How does the mirror like mind become when we perform bad actions? It becomes dirty. It is covered with dirt. As we go on performing good actions, the mirror goes on becoming clear. So, the influence that is cast over the mind and intellect by the good or bad actions is called *sanskaar.* Some are unable to change their *sanskaars* despite obtaining knowledge. They are becoming spoilt even more. In case of some, the transformation is visible as soon as they obtain knowledge.

समय-23.53-26.58

जिज्ञासु:- बाबा, इस्लाम धर्म का बीज, उसको एक कैसेट में भरत बताया है । भरण पोषण करने वाला इस्लाम धर्म का बीज है करके बोला है।

बाबा:- वो भरत नाम पड़ गया है संगमयुगी एक्ट के अनुसार। शिवबाबा जब आता है, जिस मुकर्रर रथ में आता है, वो विश्व पिता है या नहीं? उस विश्व पिता का जो भरण पोषण करता है फाउण्डेशन के पीरियड में वो ही भरत बन जाता है। इसलिये उसका नाम पड़ गया भरत। सीढ़ी के चित्र में भी भारत को भीख देते हुए कौन दिखाया गया? कोई विदेशी दिखाया गया न। तो विदेशियों में पहला-2 विदेशी कौन? इस्लाम धर्म। इसलिये विश्व भरण पोषण..., वैसे भी देखा जाय हिस्ट्री में तो दुनिया के उपर सबसे जास्ती राज्य कौन से धर्म ने किया? इस्लाम धर्म वालों ने किया। वो भरत का संस्कार उसकी सारी जनरेशन में समाया हुआ है। सारे विश्व के भरण पोषण करने वाले इस्लाम धर्म वाले बन गये। क्रिश्चियनस् का राज्य तो अभी 100-200 वर्ष के अन्दर दुनिया में फैला है। पहले तो सारी दुनिया में किनका राज्य था? इस्लामियों का ही राज्य था।

Time: 23.53-26.58
Student: Baba, in a cassette the seed of Islam was said to be Bharat. It was said, the seed of Islam is the one who maintains and sustains.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: That name Bharat (brother of Ram) is kept as per the *act* performed in the Confluence Age. When Shivbaba comes, the permanent chariot in which He comes; is he the father of the world or not? The one who maintains and sustains the World Father, during the *period* of *foundation*, he himself becomes Bharat. This is why he was named Bharat. In the picture of the Ladder also who has been shown to be giving alms to Bhaarat (soul representing India)? A foreigner has been shown, hasn't he? So, who is the first foreigner among the foreigners? Islam. This is why he maintains and sustains the world. Even, if you look at the *history*, which religion ruled over the world the most? The people of Islam [ruled]. That *sanskaar* of Bharat is present in his entire *generation*. The people of Islam became the sustainers of the entire world. The rule of the Christians has spread in the world within 100-200 years now. Initially who ruled over the entire world? It was a rule of the people of Islam themselves.

जिज्ञासु:- इस्लाम और मुस्लिम के बीच में बहुत टकराव रहता है ना।

बाबा:- वो तो दुनिया में हर धर्म के दो छेड़े हो जाते हैं। क्या? कोई भी धर्म है, किसी को भी उठा लो, देवी देवता सनातन धर्म को उठा लो -दो छेड़े हो गए सूर्यवंश और चन्द्रवंश। जब नई दुनिया शुरु हुई तो चन्द्रवंश था क्या? नहीं सुर्यवंश ही था। फिर दो छेड़े हो गए की नहीं? इस्लाम वंश के भी दो छेड़े हो गए इसी तरह। इस्लामी और मुसलमान। मुसलमान धर्म के भी दो छेड़े हो गए सिया और सुन्नी। बौद्ध धर्म के भी दो छेड़े हो गए हीनयान और महायान। तो ऐसे ही ये तो द्वैतवाद होता ही चला जाता है दुनिया में। एक से दो हो जाते हैं। एक रहता है तो सतोप्रधान। क्या? कोई भी धर्म हो जब तक उसमें एकता है तब तक सतोप्रधान और जैसे ही द्वैत शुरु होता है वैसे ही तमोप्रधान होना शुरु हो जाता है।

Student: A big conflict goes on between Islam and Muslims, doesn't it?
Baba: Every religion of the world is divided into two parts. What? Be it any religion. Take any religion [for example]. Take the Ancient Deity Religion [for example] there are two branches *Suryavansh*[13] and *Chandravansh*[14]. Was the *Chandravansh* present when the new world commenced? No. There was only *Suryavansh.* So, did two parts emerge or not? Similarly, division took place in Islam dynasty as well. The people of Islam and Muslims. Muslim religion was also divided into two parts: *Sia* and *Sunni*. Buddhism was also divided into two parts *Hiinyaan* and *Mahaayaan*. This dualism continues in the world. One gives rise to two. When it (religion) is one, it is *satopradhaan* (pure). What? Be it any religion. As long as there is unity in it, it is pure and as soon as duality starts, it starts becoming *tamopradhaan*.

[13] The Sun dynasty
[14] The Moon dynasty

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info